पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

हमारा मन हाथी के मन जैसा है। जिसे पतली-पतली रस्सियों ने ऐसा बांधा है जिससे छूटने में हम अपने आपको असमर्थ समझते हैं। कारण, जब हम छोटे बच्चे होते हैं तो हमारी रस्सी एक दो से बंधी होती है, वो हमारे माँ-बाप हैं। और जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं हम पढ़ने जाते हैं तो हमारे कुछ दोस्त बनते जाते हैं। थोड़ी ओर रस्सी मोटी हुई, इसके बाद जब हम उच्च स्तर की पढ़ाई करते हैं, कहीं बाहर जाते हैं, इसके बाद हम कमाने लग जाते हैं तो वहाँ भी औपचारिक रूप से कुछ पतली रस्सियां ओर जुड़ती जाती हैं और इसके बाद जब हमारी शादी हो जाती है एक ओर रस्सी से हम बंध जाते हैं। अब यहाँ देखिये रस्सी दिन प्रतिदिन मोटी ही होती है। जब वो एक थी पतली थी, तो तब हम उसे आसानी से तोड़ सकते थे यानी बंधन से छुट सकते थे। जैसे-जैसे हम बंधनों में बंधते चले गये तो रस्सी मोटी होती गई और उससे छूटना भी हमारे वश में नहीं रहा। अब हम असहाय हैं, हमको लगता है कि हमको सभी ने बांध रखा है कहीं किसी ने, तो कहीं किसी ने। अब देखो अगर हमारा मन ऐसे ही उलझा रहेगा तो चमत्कार कैसे होगा? सोचिये, यदि कोई भी कुछ नया नहीं कर पा रहा है, कुछ अलग नहीं कर पा रहा है, उदास रहता है या बीमार रहता है तो उसका मन निश्चित रूप से पतली या मोटी रस्सी से बंधा हुआ ही है तभी उससे कुछ क्रियेटिव नहीं हो पा रहा है। रचनात्मक बनने के लिए मोह से बहुत ऊपर उठना होता है। मोहग्रस्त इंसान कभी भी निर्णय लेने में असमर्थ होता है। ऐसे लोग कभी भी सफल नहीं होते तथा वो चार जनों (परिवार) के चक्कर में सम्पूर्ण जीवन नष्ट कर देते हैं। इतना आसान नहीं है शक्तिशाली बनना। आज जो बैचलर्स हैं वो भी उदास हैं, वो क्यों उदास हैं? उनको भी कहीं ना कहीं कुछ बातों से इतना गहरा लगाव है कि वो कुछ करना चाहे और उसे ना कर पाने में असमर्थ हैं। अब मन को खुलापन चाहिए, मन को स्पेस चाहिए हर हाल में चाहिए। आप सोचिये ज़रा यदि कुछ भी ऐसा संसार में लोगों के साथ हो रहा है तो कितना गहरा मन बंधा हुआ है हरेक चीज़ से। जिससे छोड़ना इतना मुश्किल है। इसीलिए मन अपने ढंग से काम नहीं कर सकता इसीलिए उसे खुलापन चाहिए ही। मन वास्तव में है चमत्कारी चीज़, हरेक विचार उसको कुछ देके जाते हैं। चाहे वो किसी से बंधे हुए हैं या नहीं बंधे हुए हैं। जब वो विचार करते हैं तो उन विचारों में चाहे लगाव की सुगंध हो या ईर्ष्या की दुर्गंध हो फिर भी वो विचार काम तो कर रहे हैं ना। तो क्यों ना उससे ज़ोर लगाकर तोड़ दिया जाये। तोड़ना अगर कठिन लगता है तो कारण है ताकत नहीं है। अब ताकत लेने के लिए ही मन को परमपिता परमात्मा से जोड़ने की आवश्यकता है जिससे हम ताकतवर होकर कुछ बंधनों को तोड़कर चमत्कारीक रूप से जीवन जी पायेंगे।

एक हाथी को एक पतली सी जंजीर में बांधा जाता है और वो आराम से खड़ा रहता है। कारण, जब वो बच्चा होता है तो उसे एक छोटे से पतले रस्से के सहारे बांधते हैं। और जब वो उससे छूटने का प्रयास करता है तो उसे लगता है कि वो बंधा हुआ है। इतने समय से वो ऐसे ही अपने आपको देखता आता है। चाहे तो वो उसे एक झटके से तोड़ दे, लेकिन वो उसे तोड़ नहीं सकता क्योंकि वो मान लेता है कि वो बंधा हुआ है।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-23 (2017-2018)

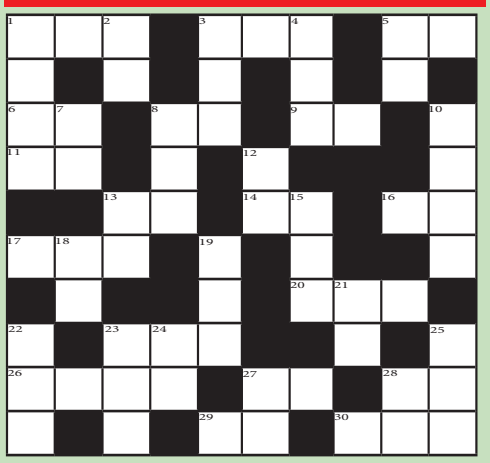

ऊपर से नीचे

1....बुद्धि विनश्यन्ति, विलोम (4)
2. संशय, शंका (2)
3. निश्चिंत, ...बादशाह (3)
4. नदी, सरिता (3)
5. अन्तर्मुखता की...में बैठकर बाबा से रूहरिहान करना है, कंदरा (2)
7. कठोर, मजबूत (2)
8. ....गया तो सब कुछ गया, आचरण (3)
10. श्रृंगार, सजावट (4)
12. आरम्भ, प्रारम्भ, आदि (2)
13. बाप, जनक, पितृ (2)
15. रक्षा, सुरक्षा, तुम्हारे पर माया का...है, नज़र (3)
18. तागा, सूत (2)
19. सहज, आसान (3)
21. ....जानें प्रभु या तुम जानो, मैं का बहुवचन (2)
22. लून, लवण (3)
23. नास्तिक, उत्पाती (3)
24. विवर, छिद्र, छेद, जमीन के नीचे जीव जन्तुओं का घर (2)
25. नृत्य करना, ठुमकना (3)
27. संग,...तुम्हारा प्रभु कितना प्यारा (2)
28. दण्ड, सुशोभित (2)

बायें से दायें

1. गफलत मत करो... सामने खड़ा है, नाश (3)
3. असीमित, अपार, जिसकी हद न हो (3)
5. छिपा हुआ, यह ज्ञान बड़ा... है (2)
6. ईर्ष्या, आपस में... नहीं रेस करना है (2)
8. ... का ज्ञान बुद्धि में फिरता रहेगा तो माया का गला कट जायेगा (2)
9. अभी तुम बच्चे रूहानी...पर हो, सफर (2)
11. बाबा ने 3 सौगातें दी हैं ताज, तिलक और ... (2)
13. पूर्वज, पितर (2)
14. शक्ल, स्वरूप, स्वभाव (2)
16. शक, संशय (2)
17. माता ओ माता तू है सबकी भाग्य... (3)
20. सुकून, तसल्ली, चैन (3)
23. योग्य, लायक (3)
26. ....में जल उठी शमा (4)
27. छाया, परछाई, प्रतिबिंब (2)
28. ....तो बिठो नच, सत्य (2)
29. यह तन शिवबाबा का ...है (2)
30. शिवबाबा हम बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्नों का...दे रहे हैं (3)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन।

वर्ग पहेली उत्तर

पहेली - 13
अप्रैल - 1 ओम - 1
2017 - 2018

ऊपर से नीचे
1. चंदा, 2. लड्डू, 3. हस्त, 4. करनीघोर, 5. अजान, 6. औलाद, 8. जीत, 11. स्वार्थी, 13. नाश, 14. आफत, 15. हित, 16. खुशी, 17. खैर, 18. राजन, 20. नगरी, 21. खुदा, 23. दवाई, 24. लगा, 25. सेवा।

बायें से दायें
1. चंचलता, 3. हमशरीक, 5. अस्त, 7. राजा, 8. जीवनी, 9. लाभ, 10. नजाकत, 11. स्वाद, 12. सार, 14. आहिस्ता, 16. खुशखैराफत, 19. ज्ञान, 21. खुशी, 22. रजत, 25. सेवाधारी, 26. सगाई, 27. जवाई।

पहेली - 14
अप्रैल - 2 ओम - 2
2017 - 2018

ऊपर से नीचे
2. तन, 4. गति, 5. चक्र, 6. कदम, 8. बाप, 9. लक्ष्य, 10. अनुभव, 12. विस्तार, 13. व्यय, 15. वशीभूत, 16. नशा, 19. सारथी, 22. रिवाज, 23. सुर।

बायें से दायें
1. श्रीमत, 3. दाग, 5. चटक, 7. नम्र, 11. पवित्र, 14. यज्ञ, 15. वरदान, 17. रावण, 18. शान्ति, 19. सार, 20. भूमि, 21. परिवार, 23. सुख, 24. कतार, 25. सजग।

पहेली - 15
मई - 1 ओम -3
2017 - 2018

ऊपर से नीचे
1.पुरूषार्थ, 2. मधुबन, 4. हवा, 5. फिसलना, 9. साधन, 10. सर्वोत्तम, 13. शरीर, 14. वजन, 15. उधार, 17. क्षीरसागर, 18. महानता, 19. नफरत, 21. लगन, 22. जन।

बायें से दायें
1. पुरूषोत्तम, 3. महफिल, 6. धुन, 7. वास, 8. हिसाब, 11. धन, 12. नाश, 14. वर्णन, 15. उत्तर, 16. धाम, 17. क्षीर, 18. मनन, 20. फसल, 22. जलसा, 23. गगन, 24. ताकत, 25.भारत।

पहेली - 16
मई - 2 ओम - 4
2017 - 2018

ऊपर से नीचे
1. महिमा, 2. भेद, 3. दवा, 5. रहम, 8. याद, 9. रचना, 10. कला, 12. समय, 13. नाम, 15. तन, 16. गफलत, 18. भनक, 19. फ्राकदिल, 21. तक, 24. मन, 26. दीपक, 27. रथ, 30. शुद्ध।

बायें से दायें
1. मतभेद, 4. क्षीरखण्ड, 6. दवात, 7. माया, 9. रमणीक, 11. दस, 13. नाच, 14. लात, 17. मनमनाभव, 20. लत, 22. जनक, 23. कम, 25. तकदीर, 28. दिन, 29. पथ, 30. शुभ, 31. खुराक, 32. सिद्ध।

बोनेयेर। करेबियन कंट्रीज़ में सेवार्थ जाने के पश्चात् बोनेयेर के राज्यपाल कर्वाइन जॉर्ज के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. ज्योति,दुबई तथा ब्र.कु. एनर,इंचार्ज,ब्रह्माकुमारीज़,बोनेयेर कंट्री।

आगरा-उ.प्र.। क्रीड़ा भारती एवं जिला प्रशासन,आगरा द्वारा होटल वैभव पैलेस मदिया कटरा में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2018 के आयोजन में सहयोग करने वालों के सम्मान समारोह में खेल मंत्री एवं क्रीड़ा भारती के प्रमुख चेतन चौहान ब्र.कु. मधु को मोमेन्टो देकर सम्मानित करते हुए। साथ हैं ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. वंदना, ब्र.कु. ममता तथा ब्र.कु. रीना।

बहजोई-डिवार्ह(उ.प्र.)। सेवाकेन्द्र के नये भवन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राज्यमंत्री गुलाबो देवी, नगर चेयरमैन राजेश शेखर, समाज सेविका संगीता भार्गव, ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य।

फतेहगढ़-उ.प्र.। मातेश्वरी जी के स्मृति दिवस पर कार्यक्रम में शुगर फैक्ट्री के अति. महा प्रबन्धक जगमोहन जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमन। साथ हैं ब्र.कु.मीरा।

हमीरपुर-उ.प्र.। जिलाधिकारी राजेन्द्र प्रताप पाण्डे को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका तथा प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पा तथा ब्र.कु. सपना।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ एवं होंडा मोटरसाइकिल के तत्वावधान में गांव गुगाना के पंचायत भवन में आयोजित नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. डॉ. दुर्गेश, डॉ. टी.एम. अग्रवाल, डॉ. अमित, डॉ. सपना, सरपंच राजपाल तथा अन्य।